(च) कुम्भूपमं कायमिमं विदित्वा नागरूपम चित्तमिदं उपेत्वा।
योधेथ मारं पञ्ञायुधेन, जितं च रक्खे अनिवेसनोसिया।।
अचिर वतथं कायो, पठविं अधिसेस्सति।
छुद्धो अपेतविञ्ञाणो, निरत्थ व कलिंगर।।

(छ) अक्कोच्छि मं अवधिं, अजिनि मं अहासि मे।
ये च तं उपनय्हन्ति वेरं तेसं न सम्मति।।
अक्कोच्छि मं अवधि मं अजिनि मं अहासिमे।
ये तं न उपनयहन्ति, वेरं तेसूपसन्मति।।

3. निम्नलिखित **सभी** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 1×10=10

(क) संस्कृत के अनुस्वार को पालि में क्या कहते हैं ?

(ख) पालि में विभक्ति की संख्या कितनी है ?

(ग) त्रिपिटक का अर्थ लिखिए।

(घ) धम्मपद में गाथाओं की संख्या कितनी है ?

(ड़) अष्टांगिक मार्ग में से किन्हीं चार के नाम लिखिए।

(च) तीसरी बौद्धपरिषद कहाँ और किसके निर्देशन में हुई थी ?

(छ) पालि भाषा के दो सर्वश्रेष्ठ ग्रंन्थों के नाम लिखिए।

(ज) 'चक्खायतन' का सन्धि विच्छेद कीजिए।

(झ) माला+भारी को मिलाने से कौन-सा शब्द बनेगा ?

(ञ) पठ्धातु का लट्लकार वर्तमान काल उत्तम पुरिस में रूप लिखिए।

M/Sem II/404(B)

M.A. (Semester II) Examination, 2014-15

Hindi

Optional Paper

Paper : VIII

Pali

Time : Three Hours ***Full Marks : 70***

(Write your Roll No. at the top immediately on the receipt of this question paper)

खण्ड-क

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 4×10=40

(क) पालि किस प्रदेश की मूलभाषा थी ? इसका समालोचनात्मक विवेचन प्रस्तुत कीजिए।

अथवा

'वानरिन्द जातकं' की कथा को संक्षेप में लिखिए तथा उससे प्राप्त होने वाली शिक्षाओं का उल्लेख कीजिए।

(ख) जातक कथाओं के आधार पर तत्कालीन सामाजिक राजनीतिक व आर्थिक परिस्थितियों का संक्षिप्त उल्लेख कीजिए।

अथवा

'वकजातकं' की कथा का क्या अभिप्राय है ? स्पष्ट करें।

(ग) आज के व्यावहारिक जीवन में धम्मपद की शिक्षाएँ मनुष्य मात्र का पक्ष कैसे प्रशस्त करती हैं ? इसे सोदाहरण लिखिए।

अथवा

'यमक वग्गो' के माध्यम से भगवान बुद्ध लोगों को क्या सीख देते हैं ? सतर्क उत्तर दीजिए।

(घ) भारतीय आर्य भाषा के विकास में पालि भाषा का क्या योगदान है ? इस प्रश्न पर विचार करते हुए पालिभाषा के विकास की अवस्थाएँ बताइए।

अथवा

'चित्तवग्गो' के आधार पर चित्तदमन के स्वरूप पर प्रकाश डालिए।

2. निम्नलिखित में से किन्हीं **चार** गाथाओं **अथवा** स्थलों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। 4×5=20

(क) वानरिन्द, इमस्मिं पदेसे कसट फलानि खादन्तो किं त्वं चिण्णट्ठाने येव चरसि, पारगङ्गाय अम्बलबुचादीनं मधुरफलानं अन्तो नन्थि. किं ते तत्थ गत्वा फलाफल खादितुं न वट्टतीति। कुम्भीलराज, गङ्गा महोदिका वितिण्णा. कथं तत्थ गमिस्सामी ति 'सचे गच्छसि अहं तं मम पिट्ठि आरोपेत्वा नेस्सामीति।

(ख) 'सम्म कुम्भील अहं अत्तानं तुय्हं परिच्चजिस्यामि, त्वं मुखं विवरित्वामं तव सन्तिकं आगत काले गण्हाहीगति कुम्भीलानं हि मुखविवटे अक्खीनि निमीलन्ति। सो तं कारणं असल्लक्खेत्वा मुखं विवरि। अथस्स अक्खीनि पिथीयिंसु। सो मुखं विवरित्वा अक्खीनि निमीलेत्वा निपज्जि। बोधिसत्तो तथाभाव ज्ञत्वा दीपिका उप्पतितो गन्त्वा कुम्भीलस्स मत्थकं अक्कमित्वा ततो उप्पतितो विज्जुल्लता विय विज्जोतमानो परतीरे अट्ठासि।

(ग) कक्कटको अतनो अकेहिं कम्मारसण्डासेन विय तस्य गीवं सुगहितं कत्वा 'इदानि गच्छांति आह। सो तं नेत्वा सरं दस्सेत्वा वरुणम्खाभिमुखो पायासि। कक्कटको आह–मातुल, अयं सरो एत्ता, त्वं पन इतो नेसी'ति। वको पियमातुलको अतिभगिनिपुत्तोसि मे त्वन्ति वत्वा त्वं एस मं अक्खिपित्वा विचरन्तो मय्हं दासोगति सञ्ञं करोसि मञ्ञे पस्सेतं वरणरूक्खमूले कण्टकरासि यथा मे ते सब्बमच्छा खादिता तम्पि तथेव खामिस्सामीगति आह।

(घ) यस्सेते चतुरो धम्मा वानरन्दि। यथा तव।
सच्च धम्मो धिती चागो दिट्ठ सो अतिवत्ततीति।।
नाच्चन्तनिकतिपपञ्ञो निकत्या सुखमेघति।
आराधे निकतिप्पञ्ञो बको कक्कटकामिवाति।।

(ङ) पमाद अप्पमादेन, यदा नुदति पण्डितो।
पञ्ञा पासादमारुय्हं असोको सोकिनिं पज।
पब्ब तट्ठो व भुमट्ठे, धीरो बाले अवेक्खति।।
अप्पमत्तो पमत्तेसु, सुतेसु बहुजागरो।
अबलस्सं व सीघस्सो, हित्वा याति सुमेघसो ।।